ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, PP-344-345,YEAR-2015

प्राचीन भारतीय ज्ञान–परम्परा

❑ डॉ0 राजनारायन शुक्ल

सार *– प्राचीन काल से ही हमारा देश उच्च मानवीय मूल्यों व विशिष्ट परम्पराओं का देश रहा है। भारत की पहचान सदैव ज्ञान–परम्परा व ज्ञान–संस्कृति के रूप में रही है। प्राचीन भारत ने दर्शन, भाशा–विज्ञान, व्यकरण, खगोल विज्ञान, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करके मानव जाति की उन्नति में योगदान दिया है।*

भारतीय ज्ञान परम्परा की उदात्तता वैदिक सम्पत्ति है। भारत पर सभ्यतागत आक्रमणों में एक बड़ा आक्रमण यहाँ की ज्ञान परम्परा पर किया गया था। भारतीय ज्ञान परम्परा के सबसे बड़े आधार वेद थे। प्राचीन काल के इतिहास में वैदिक सभ्यता सबसे प्रारम्भिक सभ्यता है। भारतीय ज्ञान परम्परा जड़ नहीं वरन् सतत् प्रवाहमान है। भारतीय संस्कृति व आदि भौतिक ज्ञान परम्परा को महत्व नहीं देती वरन् वैदिक आध्यात्मिक प्रवृत्ति को महत्व देती है। हिन्दू धर्म में अनेक ग्रन्थ जैसे– वेदांग, पुराण, रामायण एवं महाभारत जैसे ग्रन्थों की रचनायें हैं, इनमें सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद है।

भारतीय संस्कृति में गुरू–शिष्य परम्परा के अन्तर्गत गुरू (शिक्षक) अपने शिष्य को शिक्षा देता या कोई विद्या सिखाता। बाद में वही शिष्य गुरू के रूप में दूसरों को शिष्य देता है। यही क्रम चलता जाता है, भारतीय संस्कृति में गुरू का बहुत महत्व है इसलिए गुरू को ब्रह्मा–विष्णु–महेश कहा गया है। 'ग' शब्द का अर्थ है– अंधकार (अज्ञान) व 'रू' शब्द का अर्थ है– प्रकाश (ज्ञान) अर्थात् अज्ञान को नष्ट करने वाला जो ब्रह्मा रूप प्रकाश है, वह गुरू है। प्राचीन काल में आश्रमों एवं गुरूकुलों में गुरू–शिष्य परम्परा का निर्वाह होता रहा है। भारतीय संस्कृति में गुरू की भूमिका समाज को सुधार की ओर ले जाने वाले मार्गदर्शक के रूप में होने के साथ ही क्रान्ति की दिशा दिखाने वाली भी रही है। भारतीय संस्कृति में गुरू को अत्यधिक सम्मानित स्थान प्राप्त है।

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, गुरू देवो महेश्वराः।
गुरू साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

प्राचीन काल में गुरू व शिष्य के सम्बन्धों का आधार था– गुरू का ज्ञान, मौलिकता व नैतिक बल, उनका शिष्यों के प्रति स्नेह, भाव, ज्ञान बाँटने का निःस्वार्थ भाव। इसके साथ शिष्य में गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण, आज्ञाकारिता व अनुशासन आदि महत्वपूर्ण गुण थे। इस प्रकार गुरू–शिष्य एकपक्षीय न होकर द्विपक्षीय थे। शिक्षा पूर्णतयाः निःशुल्क थी। गीता में भगवान् कृष्ण ने गुरू–शिष्य परम्परा को 'परम्परा प्राप्तम योग' बताया है। गुरू–शिष्य परम्परा का आधार सांसारिक ज्ञान से शुरू होता है परन्तु इसका चरमोत्कर्ष आध्यात्मिक शाश्वत आनन्द की प्राप्ति भी कहा गया है अतः मानव जीवन का राही अन्तिम व सर्वोच्च लक्ष्य होना चाहिए।

"गुरू एक मशाल है, शिष्य प्रकाश है।"

प्राचीन भारतीय ज्ञान–परम्परा की विशेषताएँ–

1. जीवन दर्शन व शिक्षा में समन्वय : जैसा जीवन, वैसी शिक्षा ।
2. धार्मिक दर्शन की प्रधानता : शिक्षा के उद्देश्यों, उपकरणों एवं आदर्शों में धार्मिक तत्व प्रधान।
3. शिक्षा भी दर्शन थी, छः वेदांग में शिक्षा भी थी।
4. शिक्षा का ध्येय ज्ञान की प्राप्ति था।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शम्भुदयाल कालेज, गाजियाबाद (उ0प्र0) भारत

5. शिक्षण विधि का आधार जिज्ञासा था।
6. ब्रह्मचर्य काल शिक्षा के लिए निश्चित था।
7. वैदिक काल में शिक्षा निःशुल्क थी।
8. बौद्ध काल में शिक्षक का वेतन प्रारंभ हुआ व शिक्षा शुल्क लिया जाने लगा।
9. बौद्ध काल में धार्मिक तत्वों के स्थान पर सामाजिक लक्ष्यों का प्रवेश हुआ।
10. शारीरिक दण्ड का प्रावधान था।
11. शिक्षार्थी को आचार्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण में गुरूकुल में रहना पड़ता था।
12. शिक्षण पर वर्ण व्यवस्था का प्रभाव था। अध्ययन व अध्यापन का कार्य ब्राह्मण का था।
13. शुद्रों को वेदाध्यन और संस्कारों का अधिकार नहीं था।
14. विद्या को मोक्ष प्रदाता माना गया था।

अंततः हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति का मूल वेदान्त, वेद, उपनिषद् ही हैं। जब भी विश्व मनीषा को अध्यात्म के सूत्र ढूंढ़ने की आवश्यकता पड़ेगी, तब–तब उसे भारतीय ऋषियों तथा भारतीय परम्परा के श्री चरणों में आकर बैठना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय संस्कृति : प्रो. हरिदत्त शर्मा, पृ. 24–25.
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास : डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, पृ. 74–75.
3. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व : डॉ. शरणबिहारी गोस्वामी, पृ. 12.
4. भारतीय दर्शन : प्रो. रेवाप्रसाद द्विवेदी, पृ. 24.
5. श्रीरामचरितमानस : गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्या काण्ड।

*****